क्रमांक :

तारीख : 21 फरवरी, 2013

केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री महोदय,
केन्द्र सरकार, नई दिल्ली।

विषय : डी.डी.राजस्थान को डी.डी. राजस्थानी कर राजस्थानी कार्यक्रमों को प्रमुखता देने हेतु।
द्वारा–.....

महोदय,

हम आपका ध्यान राजस्थान की भाषा और संस्कृति के साथ हो रहे दोगले व्यवहार की ओर खींचना चाहते है। आप जानते हैं कि देश के लगभग हर प्रांत के लिए टीवी चैनल वहां की क्षेत्रीय भाषाओं में ही संचालित होते हैं। जैसे डीडी गुजराती, डीडी मराठी, डीडी पंजाबी, डीडी बंगाली, डीडी ओड़िया, डीडी तमिल, डीडी तेलुगु आदि। राजस्थान में भी संविधान और प्रसार भारती की नीति के मुजब जब क्षेत्रीय दूरदर्शन की शुरूआत हुई तो इसका नाम डीडी राजस्थानी रखा गया था। कुछ ही समय बाद इसका नाम डीडी राजस्थानी से बदलकर डीडी राजस्थान कर दिया गया। जबकि क्षेत्रीय प्रसारण का मतलब ही जनता से उनकी भाषा में संवाद तथा उनके लिए उनकी भाषा में ही कार्यक्रम देने से है। राजस्थानी जनता के लिए दूरदर्शन के जिस चैनल की व्यवस्था दी गई वह राजस्थान में इसलिए लोकप्रिय नहीं हो पाया क्योंकि उससे जनता का सीधा–सीधा जुड़ाव नहीं हो पाया। इस चैनल से राजस्थानी महक गायब है। राजस्थानी साहित्यकारों, लोक–कलाकारों, अभिनेताओं और कार्यक्रम निर्माता और निर्देशकों को वहां पर्याप्त जगह नहीं है। उन्हें अपने ही प्रांत में उपेक्षा का शिकार होना पड़ रहा है। यहां तक कि राजस्थान के किसानों के लिए प्रसारित किए जाने वाले खेती–बाड़ी के कार्यक्रम भी पूरी तरह उनकी मातृभाषा राजस्थानी में प्रसारित नहीं किए जाते। यह जनभावनाओं का अपमान है। सच तो यह है कि राजस्थान का यह दूरदर्शन अप्रासंगिक है। इसकी प्रासंगकिता तभी है जब इसका नाम डीडी राजस्थानी हो और इसमें प्रसारित होने वाला हर कार्यक्रम राजस्थानी भाषा में हो।

इस चैनल पर वे कार्यक्रम लोकप्रिय हो सके हैं जो राजस्थानी में प्रसारित होते हैं। राजस्थानी लोकसंगीत का कार्यक्रम 'गोरबंद' हो या राजस्थानी में समाचारों के बुलेटिन। लोग इन्हें बड़े ही उत्साह और आत्मीयता से देखते–सुनते हैं। ऐसे ही कार्यक्रमों ने आकाशवाणी को भी लोकप्रियता दिलाई। वहीं क्षेत्रीय भाषाओं में प्रसारित होने वाले चैनल भी लोकप्रिय और जन–उपयोगी साबित हुए हैं।

अतः हम संविधान और प्रसार–भारती की नीति मुजब डीडी राजस्थान का नाम डीडी राजस्थानी करने तथा इस चैनल पर राजस्थानी कार्यक्रमों को प्रमुखता से प्रसारित किए जाने की मांग करते हैं।

जै राजस्थान, जै राजस्थानी।

भवदीय